Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 06/09/2020 Accepted on : 26/09/2020 Publication Date: 30/09/2020

प्राथमिक विद्यालय में शैक्षिक प्रबन्धन की समस्या: एक चुनौती

राधा रानी सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
आर्य कन्या डिग्री कालेज, प्रयागराज (उ.प्र.)
Email - radhashweta@gmail.com

शोध – सारांश: प्रस्तुत अध्यन **प्राथमिक विद्यालय में शौक्षिक प्रबन्धन की समस्या: एक चुनौती है।**

आधुनिक समय की मांग के आधार पर भारत में प्राथमिक शिक्षा के प्रबन्धन को जनतंत्रीय ध्वनि के अनुसार होना चाहिए। प्रजातांत्रिक दर्शन अर्थात ऐसा शैक्षिक दर्शन जो सदभावना, सहनशीलता, विचारों को सम्मान, न्याय तथा कार्य एवं वाणी की स्वतन्त्रता पर आधारित होना चाहिए। शैक्षिक प्रबन्धन की प्रकृति गतिशील होती है। प्रबन्धन समय व मांग के सापेक्ष परिवर्तनशीलता पर आधारित होता है। राजनीतिक परिवर्तन भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रबन्धन को प्रभावित करता है। शिक्षण को शिक्षक का व्यवसाय माना जाता है। अतः शिक्षा प्रबन्धन भी व्यवसायीकरण से पूर्णतः प्रभावित होकर उसी पर आधारित हो गया है। मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की कमी सहयोग व समय का आभाव, शैक्षिक नियन्त्रण, उत्तरदायित्व व जवाबदेही में उदासीनता समग्र मूल्यांकन में कमी, वित्तीय अनुदान में कमी आदि शैक्षिक प्रबन्धन की मुख्य समस्यायें है। सजगता पूर्वक मानवीय संसाधन प्रबन्धन का चयन शिक्षा प्रक्रिया को मूर्त रूप देने में पूर्ण रूपेण सक्षम है। अतः इसके लिए सरकारी नीतियाॅ व शिक्षक भर्ती प्रक्रिया आदि का सुचारू रूप से संचालन करना आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था के संचालन में पाठ्चर्या प्रबन्धन मेरूदन्ड के समान है। निष्कर्ष रूप में शैक्षिक प्रबन्ध की यह प्रक्रिया समाज की आकांक्षाओं, आशाओं की प्रतिपूर्ति के लिए होना चाहिए। शैक्षिक प्रबन्धन सार्वभौमिक कल्याण की मान्यता को दृष्टिगत रखकर कार्य किया जाना चाहिए।

१ प्रस्तावना:

शैक्षिक प्रबन्धन की प्रकृति गतिशीलता से युक्त होती है। इसमे समय व मांग के सापेक्ष परिवर्तन होते रहते है शिक्षक, शिक्षा, शिक्षण व शिक्षार्थी इस शैक्षिक प्रबन्धन प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षण कला एवं विज्ञान दोनो से सपोषित होता है। इस कारण शैक्षिक प्रबन्धन में कला व विज्ञान दोनों के गुण निहित है।

शिक्षण को शिक्षक का व्यवसाय समझा जाता है। इसी कारण वर्तमान समय में शिक्षा प्रबन्धन का स्वरूप व्यवसायिक होता जा रहा है। या कहे पूर्णतः व्यवसायिक हो गया है। शैक्षिक प्रबन्ध की यह प्रक्रिया समाज की आकांक्षाओं आशाओं की प्रतिपूर्ति के लिए होती है। शैक्षिक प्रबन्धन में सार्वभौमिक कल्याण की मान्यता को दृष्टिगत रखकर कार्य किया जाता है।

किसी भी व्यवस्था के सम्यक संचालन में मानव का विशेष महत्व होता है भौतिक संसाधन कितनी भी अधिक मात्रा में उपलब्ध हो बिना निपुण व योग्यता से परिपूर्ण मानव संसाधन के भौतिक संसाधन मूल्यविहिन हो जाते है। मानव संसाधन विविध प्रकार के भौतिक संसाधनो के सम्यक प्रयोग, नियोजन संचालन तथा मूल्यांकन की सम्पूर्ण पृष्टभूमि विनिर्मित करने में कुशल सहायता प्रदान करता है। मानव संसाधन के अन्तर्गत बुद्धजीवियों का वह समूह जो अपनी योग्यता अन्तर्दृष्टि तकनीकी-प्रशासकीय दक्षता से तथा सामान्य कार्य व्यवहार से किसी प्रणाली को क्रियाशीलता प्रदान करता है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सफल संचालन तथा विद्यालय संचालन की पूरी पृष्टभूमि में मानव संसाधन का तथा भौतिक संसाधन का योगदान होता है। डा0 राधा कृष्णन के अनुसार समाज में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएॅ और तकनीकी कौशल पहुचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता देता है।

वर्तमान समय में देश की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को विकेन्द्रित स्वरूप देते हुए केन्द्र स्तर, राज्य स्तर तथा स्थानीय स्तर पर शिक्षा का प्रबन्धन किया गया है। भारतीय संविधान के संशोधन के पश्चात शिक्षा को समवर्ती सूची में स्थानान्तरण कर दिया गया है। इस संशोधन के पश्चात अब शिक्षा पर केन्द्र और राज्य दोनो को कानून बनाने की स्वतंत्रता प्रदान की गयी है।

केन्द्रीय स्तर पर शैक्षिक प्रबन्धन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत है। राज्य स्तर पर शिक्षा का प्रशासन व प्रबन्धन शिक्षा मंत्रालय द्वारा किया जाता है। प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर अलग-अलग शिक्षा मंत्री होते है। बेसिक शिक्षा मंत्री प्राथमिक शिक्षा सम्बन्धित कार्यो का उत्तरदायित्व संभालते है। स्थानीय स्तर पर शिक्षा प्रबन्धन का दायित्व जिला-पंचायत व नगर निगम के अन्तगत आता है।

२ शैक्षिक प्रबन्धन की वर्तमान चुनौतियाँ:-

कुशल मानव संसाधन की आपूर्ति, शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि, शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति, संसाधनांे की कमी, तकनीकियों की अनुपलब्धता, सामाजिक मांग शुल्क वृद्धि, व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक समस्याओं के समाधान भाषा सम्बन्धी

समस्या आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन सम्बन्धी अभिभावक जागरूकता, नामांकन, शैक्षिक उन्नति आदि।

३ शैक्षिक प्रबन्धन के उद्देश्य:

वर्तमान शैक्षिक प्रबन्ध नीतियों का निर्माण कुशल क्रियान्वयन। उचित शैक्षिक परिवेश की उपलब्धता कुशल मानव सम्बन्धी उद्देश्य शिक्षार्थियों का बहुमुखी विकास प्रजातांत्रिक शैक्षिक प्रबन्धन अपनी विशेषताओं के कारण लोकतांत्रिक राष्ट्रों में अत्यन्त प्रसिद्ध है।

४ शैक्षिक प्रबन्धन की समस्याए:

मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की कमी, सहयोग व समन्वय का अभाव, शैक्षिक नियत्रण, उत्तरदायित्व व जवाबदेही में उदासीनता, समग्र मूल्यांकन, वित्तीय अनुदान।

५ वर्तमान की मुख्य समस्याए:

शासन की गुणवत्ता में कमी, समावेशी शिक्षा की उपेक्षा, शिक्षक प्रबन्धन की समस्या, प्रशिक्षण स्कूलों का प्रबन्धन, प्रशासन और प्रबन्धन की उपेक्षा, पाठ्यक्रमों में व्यवहारिकता की कमी, आकड़ों में अविश्वसनीयता, शिक्षा संस्थानों की खराब स्थिति आदि।

६ शैक्षिक प्रबन्ध के विभिन्न आयाम:

शिक्षा में प्रबन्धन, भौतिक संसाधन प्रबन्धन, मानव शक्ति प्रबन्ध, पाठ्यचर्या प्रबन्धन, विद्यालयी अनुशासन प्रबन्धन पाठ्य सहगामी क्रियाओं सम्बन्धी समय सारणीय, विद्यालय अभिलेख सम्बन्धी, केन्द्र और राज्य स्तर शैक्षिक नीतियाँ आदि।

शैक्षिक प्रबन्धन अनेक कारको जैसे ऐतिहासिक, दार्शनिक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक सांस्कृति, धार्मिक भौगोलिक राजनैतिक, वैज्ञानिक आदि से सम्बन्ध रखता है। विद्यालय मे उपलब्ध भौतिक संसाधनों की सहायता से ही मानवीय संसाधन वांछित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लक्ष्य की ओर अग्रसित होता है। शैक्षिक प्रबन्ध, भौतिक प्रबन्धन की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

मानवीय संसाधन प्रबन्ध शिक्षा कार्य को मूर्त रूप देने में सहयोग प्रदान करने से है। मानव संसाधन प्रबन्धन के लिए सरकारी नीतिया व शिक्षक भर्ती प्रक्रिया आदि का सुचारू रूप से संचालन आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था के संचालन में पाठ्यचर्या प्रबन्धन मेरूदण्ड के समान है।

विद्यालयी नियम कानून संहिता व्यवस्था के सम्यक संचालन हेतु अनुशासन प्रबन्धन का होना अत्यन्त आवश्यक है। अनुशासन स्व नियंत्रण आन्तरिक भावना समाज अनुकूल कार्य व्यवहार अनुशासन तथा स्वतन्त्रता में अत्यन्त धनिष्ठ सम्बन्ध है आधुनिक समय मे संस्थाओं में अनुशासनहीनता के अनेक कारण है। इनमें शैक्षिक आर्थिक सामाजिक पारिवारिक राजनीतिक कारक मुख्य रूप से सम्बन्धित है। इनका उचित समाधान होना चाहिए। विद्यालयों में स्व-अनुशासन तथा आत्मप्रेरित अनुशासन की ओर विद्यार्थियों को उन्मुख करने का प्रयास होना चाहिए।

आर्थिक रूप से अशक्त विद्यालयों के लिए कई सरकारी पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन किया जाता है। इसमें प्रमुखतः स्काउट गाइड रेडक्रास शैक्षिक भ्रमण शैक्षिक यात्राए आदि है। समय सारणी विद्यालयी क्रिया-कलापों का दर्पण होती है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने और विद्यालय संचालन की व्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विद्यालय प्रबन्धन समितियों को पुनर्गठित करने के लिए शिक्षा विभाग पुनर्विचार कर रहा है। 2014 में पुनर्गठित विद्यालय प्रबन्धन समितियों का कार्यकाल पूर्ण हो गया है।

हाल के दशकों मे आर्थिक, सामाजिक व अन्य क्षेत्रों में ढँचागत एवं नीतिगत स्तर पर काफी प्रगति हुयी है। फलस्वरूप देश की विकास दर तेजी से बढ़ी है। इस बढ़ती विकास दर ने अन्य क्षेत्रों के साथ साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधारों को गति प्रदान की है। लेकिन इन परिवर्तनों ने हमारी शिक्षा व्यवस्थाओं की मूल समस्याओं को दूर नही किया है वर्तमान शिक्षा की विश्व में स्थिति विद्यमान समस्याओं एवं संकलित समाधानों की चर्चा करंगें।

न्यूयार्क के0पी0ई0यू0 रिसर्च सेन्टर द्वारा विश्व के 90 से अधिक देशों में स्कूली शिक्षा मानकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन विश्व में ष्धर्म एवं शिक्षाष् नाम से किया गया। दुनिया के प्रमुख धर्मो के बीच शैक्षिक प्राप्ति पर केन्द्रित है। इसमें हिन्दुओं मे शैक्षिक प्राप्ति का स्तर सबसे कम पाया गया है। और भारतीय विद्यालयी शैक्षणिक व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर सबसे निम्न स्तर प्रदान किया गया है।

हावर्ड विश्वविद्यालय और कोरिया विश्वविद्यालय के आर0जे0 बैरो द्वारा वर्ष 2011 में सर्वेक्षण किया गया वहाँ भी यही निष्कर्ष प्राप्त हुए। यूरोप ने भारतीय स्कूलों की गुणवत्ता का अध्ययन किया। यूरोप में 110 देशों में भारत को नीचे से दूसरा स्थान, भारत की शिक्षा की निराशाजनक स्थिति को प्रदर्शित करता है।

गैर सरकार संगठन प्रथम की वार्षिक शिक्षा स्थिति की रिर्पोट के द्वारा वर्ष 2014 के मूल्यांकन के अनुसार कक्षा 3 के 75 प्रतिशत बच्चे, कक्षा 5 के 50 प्रतिशत, कक्षा 8 के 25 प्रतिशत, कक्षा 2 की पुस्तक पढ़ने मे असमर्थ पाये गये। अनेक अध्ययनों से साबित हो चुका है। विश्व में सीखने की दृष्टि से भारतीय बच्चे किसी अन्य देश से आगे है।

७ निष्कर्ष:

सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदम शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने हेतु टी0आर0 सुब्रहमण्यम समिति का गठन किया गया। इस समिति ने शिक्षा के क्षेत्र के लिए एक नया सवाल सर्विस कैडर बनाने यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन का उन्मूलन कक्षा 5 तक निरोधक नीति जारी रखना प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी की शिक्षा देने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए परन्तु सरकार द्वारा अभी तक इन सुझावों को लागू नही किया जा सका।

के. कस्तूरी रंगन समिति ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समकालीन बनाने उसकी गुणवत्ता में सुधार लाने शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रियकरण, विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत में प्रवेश आदि प्रावधान दिए।

बच्चों के भविष्य को सही राह दिखाने व देश में समावेशी विकास को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा व्यवस्था को चुस्त दुरूस्त करना होगा। अतः हमे अन्य सुधारों के साथ साथ उचित प्रशासन मानकों सरकार द्वारा पर्याप्त प्रोत्साहन तथा स्व कार्य प्रणाली को अपनाना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

१ मालवीय, राजीव (2013) शैक्षिक तकनीकी एंव प्रबन्ध, शारदा पुस्तक भवन पृष्ठ सं. 285-294.
२ पाण्डेय, आर.एस. व मिश्र, के.एस. (1990) भारतीय शिक्षा की स्वलन्त समस्याए पृष्ठ सं. 49-73.
३ श्रीवास्तव, ए.आर.एन. (2002) भारतीय सामाजिक समस्याए, के.के. पब्लिकेशन पृष्ठ सं. 311-325.
४ गुप्ता, डा. एस.पी. (2001) मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
५ शर्मा आर.ए. (2007) शिक्षा तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन आर. लाल बुक डिपो मेरठ.